

क्या ब्राह्मण जातिवादी और स्वजाति पोषक थे/हैं?



- मेजर सरस त्रिपाठी, गाजियाबाद

ब्राह्मण समाज के विरुद्ध आजकल चौतरफा आक्रमण हो रहे हैं। कई प्रकार का मिथ्या साहित्य लिखा जा रहा है। हजारों वीडियो भी आपको यूट्यूब और अन्य स्थानों पर मिल जाएंगे जिसमें ब्राह्मणों को तरह तरह की गालियां दी जा रही हैं और उनके ऊपर आरोप लगाए जा रहे हैं। इन आरोपों को सुन और देख कर विप्र समाज के लोग और मुख्यतः युवा वर्ग अत्यधिक उद्धेलित/उत्तेजित होता है। कई नवयुवा विप्र बंधुओं ने मुझे फोन पर और कई व्यक्तिगत या सामूहिक वार्ता में भी चर्चा के दौरान मुझसे यह प्रश्न पूछते हैं कि जो ब्राह्मण समाज पर आरोप लगाए जा रहे हैं उसका हमारे पास क्या उत्तर है। इन मिथ्या आरोपों की संख्या बहुत है। उनमें से एक प्रमुख आरोप है कि ब्राह्मण जातिवादी थे और जातिवादी हैं। उन्होंने अपनी ही जाति के लोगों को प्रोन्नत किया, अपनी ही जाति के लोगों की प्रगति के लिए कार्य किया। यह भी कहा जाता है कि संपूर्ण 'ब्राह्मण साहित्य' (सभी वेद, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण, पुराण, रामायण महाभारत और इस तरह के अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक साहित्य को 'स्वघोषित नवबुद्धिजीवियों' ने 'ब्राह्मण साहित्य' नाम दिया है) ब्राह्मणों की प्रशंसा में ही भरा हुआ है। यह आरोप लगाया जाता है कि चूंकि ब्राह्मण ही इन के लेखक हैं इसलिए उन्होंने ब्राह्मणों को महिमामंडित किया है और अन्य जाति के लोगों को बहुत ही नीचे स्थान प्रदान किया है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से उद्धृत -

'पूजहि विप्र सकल गुण हीना ॥ शूद्र न पूजहु वेद प्रवीणा ।'

तथा ऋग्वेद के मण्डल 10, सूक्त 90, ऋचा 12 में वर्णों की उत्पत्ति के विषय में उल्लेख को उद्धृत किया जाता है:-

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायतः ॥'

(परमपिता के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य एवं पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई) का उल्लेख किया जाता है।

इसके अतिरिक्त यह कहा जाता है ब्राह्मणों ने अपनी प्रशंसा की, स्वयं को पुरस्कृत किया (अब तक 48 लोगों को भारत रत्न से सम्मानित किया गया है, उसमें से 22 यानि लगभग 46 फीसदी अकेले ब्राह्मण हैं।), उच्च और महत्वपूर्ण पदों पर अपनी ही जाति के लोगों को चयनित किया इत्यादि। आरोप अंतहीन हैं।

सच यह है कि ब्राह्मण कभी भी जातिवादी नहीं था। यहां-वहां इक्का-दुक्का छुटपुट घटनाओं को छोड़कर ब्राह्मण का दृष्टिकोण हमेशा 'वसुधैव कुटुंबकम्' का था। ब्राह्मणों ने हमेशा संपूर्ण विश्व के कल्याण की बात कही और उसी दिशा में अनवरत प्रयास करते रहे। मैं अपने विप्र बंधुओं से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जब कोई भी व्यक्ति आपको जातिवादी कहे तो आप उससे कुछ सवाल अवश्य पूछिए। क्यों कि बदलाव का एक यंत्र विरोध/प्रतिकार भी है।

प्रश्न यह है कि यदि ब्राह्मण जातिवादी थे तो मंदिरों में ब्राह्मणों की पूजा क्यों नहीं होती जबकि पुजारी सब ब्राह्मण ही हैं? यदि ब्राह्मण जातिवादी थे तो उन्होंने अपना 'दैवीकरण' क्यों नहीं किया अपने को ईश्वर के रूप में स्थापित क्यों नहीं किया? ब्राह्मण जिस श्रीराम, श्रीकृष्ण और महादेव शिव को परमात्मा मानता है उनका आधुनिक युग के जातिवादियों ने जातीय विभाजन कर दिया। यह ब्राह्मणों ने नहीं किया। कुछ कुछ लोग भगवान श्री कृष्ण को अपनी जाति का 'यादव' बताते हैं और कहते हैं कि वह यादव थे। कुछ लोग भगवान श्री रामचंद्र जी को क्षत्रिय बताते हैं। यदि जातीय विभाजन को माना जाए तो भगवान शिव एक किरात जाति के थे जो कि आज के वर्गीकरण में एक शेड्यूलड ट्राइब (जनजाति) है। भारत के अधिकतम मंदिरों में इन्हीं 3 देवताओं की पूजा होती है और इनमें से कोई भी ब्राह्मण नहीं है। यदि ब्राह्मण जातिवादी होते तो वशिष्ठ, नारद, जमदग्नि, परशुराम, व्यास, याज्ञवल्क्य, दुर्वासा, द्रोणाचार्य, अगस्त्य, पुलस्त्य इत्यादि की पूजा करते। क्या उनके पास ईश्वर तुल्य महामानवों की कमी थी? किंतु किसी ब्राह्मण की पूजा तो नहीं होती। जबकि दूसरी तरफ सभी देवताओं को संपूर्ण संसार में अमर करने वाले ब्राह्मण कवि और लेखक ही हैं। यदि ब्राह्मण जातिवादी होते तो महर्षि वेदव्यास अपने पूर्वजों और ब्राह्मणों की प्रशंसा में महाभारत लिखते और तुलसीदास (रामबोला द्विवेदी) रामचरितमानस ना लिखकर रावणचरितमानस लिखते क्योंकि रावण एक ब्राह्मण था और एक ऐसा ब्राह्मण था जिसके समान धरती पर उस समय ना तो कोई विद्वान ना तो कोई धनवान ना तो कोई ज्ञानी ना तो कोई शक्तिशाली और ना ही कोई उसके सामान राजा था। फिर भी गोस्वामी तुलसीदास ने राम की प्रशंसा में रामचरितमानस लिखा

ना कि रावणचरित मानस। भक्त सूरदास जो कि मथुरा के चौबे थे, उन्होंने कृष्ण (यादवों द्वारा घोषित यादव) की प्रशंसा में कितने पद लिखे जो सूरसागर में संग्रहीत हैं वह ऐसा ग्रंथ किसी ब्राह्मण की प्रशंसा में भी लिख सकते थे। ऋषि मुनि ज्ञानी यहां तक कि भगवान परशुराम की प्रशंसा में भी लिख सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि ब्राह्मण वस्तुनिष्ठ (objective) थे और सद्गुणों (noble virtues) की पूजा करने वाले थे न की जाति की। उन्होंने जिन देवों को अपना इष्ट समझा उसकी पूजा की और उसकी जाति का, उनके वर्ण का उनके मन में कोई भी विचार नहीं था।

यदि मैं इन उदाहरणों को देता हूं तो कोई कह सकता है यह सब पौराणिक है। मैं इस युग में ब्राह्मणों द्वारा अन्य जातियों के लिए किए गए कार्यों के विषय में भी कुछ बात करना चाहता हूं। दलित उत्थान के लिए जितना कार्य ब्राह्मणों ने किया है उतना स्वयं ना तो दलितों ने किया है और न किसी अन्य जाति ने। महाराष्ट्र के अधिकतर संत जिन्होंने दलितों के उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन उत्सर्ग कर दिया, ब्राह्मण थे। आज के युग में कैलाश सत्यार्थी, बाबा आमटे, निर्मला देशपांडे जैसे ब्राह्मण महा पुरुषों/महिलाओं ने अपना संपूर्ण जीवन दलितों के उत्थान के लिए उत्सर्ग कर दिया। महात्मा गांधी के परम शिष्य आचार्य विनोबा भावे, जो महाराष्ट्र के ब्राह्मण थे, उन्होंने

अपना संपूर्ण जीवन दलित उत्थान के लिए उत्सर्ग किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर, राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती अनेकानेक।

1952 में जब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर मुंबई से अपना चुनाव हार गए तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें फिर भी अपने कैबिनेट में शामिल किया और उन्हें भारत के पहले कानून मंत्री बनने का गौरव प्रदान किया। कांग्रेस के प्रत्याशी से ही हारे हुए व्यक्ति को अपने कैबिनेट में लेना अत्यंत सदाशयता का विषय था। भारत के सबसे महान और सबसे मजबूत साम्राज्य, मगध साम्राज्य की नींव आचार्य विष्णुगुप्त ने रखी। इतना बड़ा कूटनीतिज्ञ इतना बड़ा राजनीतिज्ञ विश्व इतिहास में कोई नहीं हुआ। ब्राह्मण विष्णु गुप्त ने किसी ब्राह्मण को देश का सम्राट नहीं बनाया बल्कि अनाम जाति के चंद्रगुप्त मौर्य को अपने साम्राज्य का सम्राट बनाया।

पुरस्कारों की बात करें तो यह योग्यता पर मिलता है, जाति पर नहीं। अन्यथा एशिया का पहला नोबेल पुरस्कार, 1913 में एक ब्राह्मण (गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर) को ही क्यों मिलता? इसे देने वाले सभी गोरे यूरोपियन ईसाई थे, न कि भारत के ब्राह्मण। अभी तक 10 भारतीयों या भारतीय मूल के लोगों को नोबेल पुरस्कार मिल चुका है, उसमें से सात अकेले ब्राह्मण जाति के हैं। ये हैं: रवीन्द्र नाथ टैगोर, चंद्रशेखर वेंकटरमण, सुब्रमण्यम चंद्रशेखर (अमरीकी नागरिक), वेंकटरामन कृष्णन (अमरीकी नागरिक), कैलाश सत्यार्थी, आर के पचौरी और अभिजीत बनर्जी (अमरीकी नागरिक)। अगर भारतरत्न पाने वालों में 46 फीसदी ब्राह्मण हैं तो नोबेल पाने वाले भारतीयों में 70 फीसदी ब्राह्मण हैं। और हां, नोबेल पुरस्कार प्रदान करने वाली समिति में कोई ब्राह्मण नहीं है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, पेप्सिको, सिटी बैंक जैसी दुनिया की बड़ी कंपनियों के शिखर पर बैठे ब्राह्मणों का चयन, भारत के ब्राह्मणों ने नहीं किया है।

तथा कथित ब्राह्मणवाद के सबसे बड़े आलोचक ब्राह्मण ही हैं। ई एम एस नम्बूद्रीपाद केरल के उच्च कुलीन वेदपाठी परिवार में पैदा हुए और स्वयं गहन वेदाध्ययन किया। फिर भी वह संसार के पहले लोकतांत्रिक तरीके से चुने कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री बने। वह घोर ब्राह्मण विरोधी था। दक्षिण पंथ हो या वामपंथ, सबके प्रणेता वही है। इसीलिए सब जगह दिखाई देते हैं। □

- 9717494674

ब्राह्मणत्व और ब्राह्मणवाद

ब्राह्मण के लिए विहित विधान और आचरण का पालन करने वाला व्यक्ति अपने भीतर ब्राह्मणत्व का संपोषण करता है और बाहर उसके सद्गुणों का सम्प्रसारण। ब्राह्मणत्व का अर्थ है-सबमें सदैव ब्रह्म का दर्शन करना, जिसके लिए तुलसीदास ने लिखा है- 'सियाराम मय सब जग जानी, करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।' दुर्गासप्तशती में भी 'या देवि सर्वभूतेषु' के रूप में प्राणिमात्र में व्याप्त गुणों/शक्तियों को 'नमस्तस्यै' कहा गया है।

ब्राह्मणवाद का अर्थ है- ब्राह्मणत्व को केवल ब्राह्मणों की परिधि में ही सीमित रखना। न तो इसका प्रकाश बाहर जाये, न ही बाहर से इसमें किसी का प्रवेश हो। साथ ही इस धारणा का पालन कि ब्राह्मण ही सर्वश्रेष्ठ है, गलत है। जहां तक ब्राह्मणेतर के ब्राह्मणीकरण का प्रश्न है तो इसके लिए भारतीय आचारसंहिता के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'मनुस्मृति' में कहा गया है- 'जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा विप्र समुच्चयते।' अर्थात् जन्म से शूद्र जाति में उत्पन्न होकर भी उसका कर्म ब्राह्मणोचित है तो उसे हम ब्राह्मण (विप्र) ही कहेंगे।

विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए थे। सन्त रविदास बनारस में जूते सिलने वाले चमार थे, किन्तु कथनानुसार उनकी प्रार्थना पर भरी सभा में बनारस के ज्योतिर्लिंग बाबा विश्वनाथ वहाँ आ उपस्थित हो गए थे। इस घटना के बाद काशी-नरेश और वहाँ के ब्राह्मणों ने उनका अभिषेक कर न केवल ब्राह्मणीकरण किया, वरन राजा समेत इन ब्राह्मणों ने रविदास को पालकी में बिठाकर पूरा नगर घुमाया भी था। इसका विलोम भी इतना ही सत्य है। पथभ्रष्ट ब्राह्मणों का शूद्रीकरण हो जाता था अथवा शूद्र कर्म करने वाले ब्राह्मणों को 'शूद्र' की संज्ञा दी जाती थी। □